Vol 3 Issue 3 April 2013

Impact Factor : 0.2105(GISI)

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 3, Issue. 3, April. 2013
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

संत साहित्य मे कबीर और नारी

निधि सैनी

हिन्दु गर्ल्ज कोलेज, जगाधरी

सारांश:

''यत्र नार्यस्तु पुज्यनते रमनते तत्र देवताः'' से लेकर ' नारी तुम केवल श्रद्वा हो' जो भाव है उससे नारी के पावन रूप की प्रतिष्ठा का पता चलता है। नारी का इतिहास अनेक उत्थान–पतनो का इतिहास है। समय–समय पर नारी विषयक मानदण्डो मे परिवर्तन होता रहा है। मध्यकाल मे नारी के सम्बंध मे जो भाव और मूल्य निश्चित किए गये थे, उन्होने तत्कालीन कवियो को भी प्रभावित किया है। धर्म, विराग और त्याग की भित्ति पर स्थिति संत सम्प्रदाय के विरागमूलक धर्म मे नारी अपने कामिनी रूप तथा प्रलोभनो के साथ अवरोध सदृश थी। विश्व के प्रत्येक राष्ट्र ओर युग के विरागियो ने नारी को तप के मार्ग की बाधा मानकर गर्हित बताया है। युगयुगान्तर तक नारी पतन–कारिणी, निन्दनीय एंव त्याज्य समझाी जाती रही। यह परम्परा संस्कृत के निति –ग्रन्थो मे भी मिलती है। जैन और नाथ कविशे ने उसे योग–दर्शन की बाधा और ससंर्ग ये पुरूष का नाश करने वाली बताया। नारी उपासना के दुष्परिणाम और अनाचारो को देखकर ही गोरख को घोषित करना पडा कि नारी के ससंर्ग मे लीन पुरूष सरिता के तट पर स्थित अनिश्चित जीवन वाले वृक्ष के समान है। इसी परम्परा मे संतो ने नारी को अविधा का प्रतिक, माया मोह का आवरण मानकर उसकी भर्त्यना की है।

प्रस्तावना :

भारतीय संत कवियो ने नारी के सम्बंध मे प्रायः तीन प्रकार का दुष्टिकोण अपनाया है।

1.आकर्षण भाव 2.विकर्षण भाव 3.उदासीन भाव

1.आकर्षण भाव: जहां स्त्रियों के प्रति आकर्षण भाव प्रदर्शित होता है वहां उदात्त भाव ही प्रकट होता है। जैसे मांख सती बहिन आदि के प्रति जो आकर्षण दिखाई देता है, वह उदात्तीकृत ही होगा।

2.विकर्षण भाव: यह भाव विरक्तिजन्य होता है। इसके अन्तर्गत मन को स्त्री से मोडने का प्रत्यन रहता है। इस स्थिति मे स्त्री के शरीर और चरित्र की अनेक बुराईयां प्रस्तुत की जाती है। जिससे उसके प्रति विकर्षण भाव उत्पन्न होता है।

3.उदासीनता: मन की वह स्थिति है जिसमे न तो आकर्षण के लिए और न विकर्षण के लिए अवकाश रहता है। नारी के प्रति न कोई राग रहता है और न ही द्वेष।

कबीर आदि संत उदासीण होने का उपदेश मात्र देता है, वासतव मे वे उदासीण है। कबीर ने नारी को नरक का द्वार माना है तथा स्थान–2 पर बताया है कि नारी बहुत बडा विकार है। उन्होने विषय7लिपत नृप नारी को निन्दनीय और भक्तिमयी दासी को आदरणीय कहा। नारी के जननी स्वरूप वात्साल्य की निन्दा से कबीर जैसे संत भी विद्रोह कर उठे। सती का आर्दश कबीर कसे अत्यंत प्रिय लगा। उन्होने अपनी साधना की तुलना सती की साधना से की। कबीर ने भगवद्भक्ति की आधिकारीगणी नारी को भी पुरूष के समान ही माना।

कबीर का माप दण्ड भक्ति था। इसलिए उन्होने नारी को माया, कामिनी, वासना का कलुषित छाया समझ कर उसकी भर्त्यना की, किन्तु निर्गुण और सगुण दोनो से परे अपने असीम प्रियतम के प्रति अपनी कोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति स्ंवय नार बनकर की। उन्होने ईश्वर को पति माना तथा स्ंवय पत्नी के ह्रदय के असीम अनुराग और एक निष्ठाा से उसकी अराधना की।

कबीर ने नारी बनकर अपने अविनाशी प्रियतम के साथ अभिसार किया, फाग खेला और नाना क्रिडाऐं की। उनका अन्तिम लक्ष्य स्ंवय को परमात्मा मे लीन की देना ही है। अननत प्रतीक्षा, अविरल साध्ना के बाद वहद चरमवस्था आती है, जब आत्मा रूपी नारी का अन्नत के साथ चिरअभिलाषित तादात्मय हो जाता है। इसको कबीर ने अध्यातमिक विरह कहा है। भक्त रूपी दुल्हन इसके लिए अनेक प्रकार की सामग्री जुटाती है। भय संकोच और जल्ल के विभिन्न भावों का स्वाभाविक अंकन इन संतो के काव्य मे हुआ है।

नारी का असत रू

त्याग ओर वैराग्यपूर्ण साधना द्वारा शुद्व हुदय ही प्रभु–भक्ति का अधिकरी हो सकता है। विश्वमोहिनी माया अपने विभिन्न प्रलोभनो,

मनोरम आर्कषणा से मन को पथभ्रष्ट करना चाहती है। कामिनी उसकी सबसे बडी सहायिका है। उसका आकर्षण – पाश अत्यन्त कठोर है। वह मानव को सत् से असत् की ओ उन्तुख करती है। अत5 कबीर कामिनि का त्याग अनिवार्य मानते है।
कबीर ने नारी संग को अत्यन्त दूषित और अथजल्याणकारी बताते हुऐ नारी की छाया मात्र से विषधर के अंधे होने होने की बात कही है।

''नारी की छाई परत अंधा होत भुजंग।
कबिरा तिनकी कोन गति नित नारी को संग।।[1]

कबीर नारी के पास बैठने तक का निषेध करते है, चाहे वह सुगधित स्वर्ग मे निर्मित अपनी जननी ही क्यो न हो। नारी जिस नर से संसर्ग मे रहती है उसके तीन गुण का नाश कर देती है। इस भाव को पार करने के मार्ग मे दो दुष्कर घाटियां पउती है।, एक कनक और दूसरी कामिनी।

'' चलौ चलौ सब कोइ कहै पहुंचे बिरला कोय।
एक कनक औ कामिनी दुरगम घाटी दोय।।[2]

समान्यतः समस्त संत कवियो ने नारी के कामिनी रूप की निन्दा एंव भर्त्सना की है। उसे घृणि, भयप्रद, हानिकारक, अभिशापपूर्ण बतलाया है। कबीर की इस नारी घृणा के पीदे सहजयानियो और वज्रयानियो का प्रस्तुत किया हुआ नारी उपासना का कुत्सित पातावरण था। उसकी प्रतिक्रिया के रूप मे ही नाथ–सम्प्रदाय का प्रवर्तन हुआ थां। नाथो ने इस वातावरण पर भीषण प्रहार किया जो नारी निन्दा के रूप मे प्रकट हुआ। कबीर की वाणी मे नाथो का सवर ही मुखरित हुआ। इसलिए कबीर ने योग औंर भक्ति का प्रथम ससोपान इन्द्रियश्र–निग्रह माना। नारी समाज की भोग–लिपसा को उद्दीपत कर सकती है। अतः उसके ससंर्ग का त्याग ही साधना की प्रथम सीढी है।

नारी का सत् रूप

कबीर की आदर्श नारी पतिवत्रा है। उन्होने इसके इस स्वरूप को उच्च बताकर एकनिष्ठाा और त्याग को वन्दनीय बताया। जो नारी अपने पति के शव के साथ आत्मोत्यर्ग कर देती है, वह कबीर के शब्दो मे महती है। यह मानना सही है कि कबीर ने 'पतिव्रता शब्द का दोहरा अर्थ लिया है। लौकिक पतिव्रता से उनका तात्पर्य उस नारी से है जो एकनिष्ठ भाव से पति की सेवा करती हुई गृह–धर्म पालन करती है। आलौकिक पतिव्रता से वह भक्त संकेतित होता है। जिसमें ईश्वर के प्रति अटल अनुरक्ति एवं एकनिष्ठता अपेक्षित है। पतिव्रता और परमात्मा से एकनिष्ठ प्रेम करने वाले भक्त को एक मानकर कबीर ने पतिव्रता की महिमा का गान किया है। परमात्मा का अनन्य भक्त उस पतिव्रता के ही समान है जो पति को ही देवता मानती है। परब्रह्म को त्याग अन्य देवी–देवताओं के उपासकों को कबीर ने व्यभिचारिणी नारी के समान माना है जो अश्रद्धा और निंदा की पात्री है।

कबीर के प्रेम के आदर्श सती और शूर है। भक्त का संग्राम शूर के संग्राम से भी बढ़कर है, सती के आत्मबलिदान से भी श्रेष्ठ है, परन्तु फिर भी यदि भक्त के आत्मबलिदान की झलक कहीं दिख सकती है तो वह सती और शूर में ही दिखती है। सच बात तो यह है कि पतिव्रता या सती नारी सदैव अपने मन–मन्दिर में प्रियतम को प्रतिष्ठित करके नेत्र मूँदकर ध्यानमग्न हो जाती है। वह अपनी दृष्टि में दूसरे को लाने की बात तक नहीं सोचती–

''नैनां अंतरि आव तूँ ज्यूँ हौं मैन झपेउं
ना हैं देखौं और को ना तुझ देखन देउं।[3]

इससे यह भी व्यक्त होता है कि पतिव्रता नारी अपने प्रेम–धर्म और विश्वास के प्रति आस्थावान और दृढ़ है तभी तो वह न तो किसी को अपने दृष्टि–पथ में लाती है और न प्रिय को ही इसके लिए मुक्त छोड़ना चाहती है।

प्रतीक रूप में नारी –

कहने की आवश्यकता नहीं कि कबीर का उपास्य निराकार ब्रह्म है। निर्गुण में भी भक्ति साधना के क्षेत्र में कुछ गुणों का आरोप हो ही जाता है। भक्ति–भावना की अतिशयता में कबीर ने भी परमात्मा के साथ प्रेम–मूलक लौकिक सम्बंधों का आरोप किया है। जिस दृढ़, अनुरक्ति एवं समर्पण–भावना की अभिव्यक्ति कबीर अपने राम के प्रति करना चाहते थे, वह केवल दामपत्य–भाव में ही संभव थी। अतः नारी को असत् और माया का प्रतीक मानकर भी उसी के हृदय की कुसुम–कोमल भावनाओं का अवलम्ब लेकर स्वयं प्रभु की ''बहुरिया'' बनकर कबीर ने इष्ट के प्रति प्रणय निवेदन किया है। कबीर ने दामपत्य–भाव से परमात्मा की उपासना भारतीय परम्परा के अनुरूप की है। उन्होंने अपने को परमात्मा की पत्नी–प्रेयसी मानकर उनके प्रति प्रेम व्यक्त किया है। कबीर के अनुसार ब्रह्म ही एक पुरुष है और भक्त आत्माएँ उसकी पत्नियाँ है।

स्वकीया भाव– कबीर ने वैष्णव भक्ति को अपना आदर्श बनाया। वैष्णव भक्ति में दामपत्य भाव के रूपक द्वारा भक्त अपने हृदय की कोमल प्रेमानुभूति को इष्ट के प्रति अभिव्यंजित करता है। भक्ति के इस स्वरूप का नाम माधुर्य भावना है। कबीर की भक्ति में भी माधुर्य की झाँकी मिलती है। उन्होंने स्वकीया के आदर्श को ही पावन माना है और अपने ऊपर सती और पत्नी का ही आरोप किया है।

संयोग आर वियोग– प्रेम के ये दो पक्ष हैं। कबीर–वाणी में इनके लिए मिलन और विरह का प्रयोग मिलता है। कबीर का मिलन भावात्मक मिलन है। उसमें प्रिय और प्रेमी, उपास्य और उपासक का पूर्ण तादात्म्य हो जाता है। अतः कबीर ने मिलन का उतना अधिक चित्रण नहीं किया जितना मिलन से पूर्व की विरहानुभूति संयोग की उत्सुकता, चिन्ता, मिलनकालीन संकोच एवं लज्जा आदि का कबीर की रचना में उनकी विरहिणी आत्मा की विरह–भावना उसीम प्रियतम के प्रति व्यापक अटूटता लिए हुए है। निराशा और अवसाद के क्षणों की कबीर की विरहकातर आत्मा की पुकार उनकी वाणी को अमर कर गई है।

माता का रूपक –

नारी के मातृत्व, उसके स्नेहपूर्ण वात्सल्य और क्षमाशीलता ने कबीर के अन्तर को हुआ होगा, तभी तो उन्होंने परमात्मा का माता मानकर अपने को बालक माना है। ममतामयी जननी के समक्ष पुत्र का अपराध भी नगण्य और क्षम्य होता है। वह बालक के सुख–दुःख, हास–उल्लास को उससे अधिक अनुभव करती है। इसी जननी की स्नेहमयी प्रकृति की दुहाई देकर कबीर अपने अपराध क्षमा कराते हैः–

''हरि जननी मैं बालक तोरा।
काहे न अवगुण बकसहु मोरा।
सुत अपराध करै, दिन केते, जननी के
X X X X
कहै कबीर एक बुद्धि बिचारी,
बालक दुःखी महतारी।।[4]

त्याग और तपस्या की जिस आधार–भूमि पर संत स्थित थे, उसके अनुसार संतों ने नारी के कामिनी रूप को त्याज्य और घृणित बताया। संयम को श्रेयस्कर समझने वाले संतों ने काफी पुरुष और नारी दोनों को ही असत् का प्रतीक माना, क्योंकि उनका आदर्श भिन्न था। कबीर भक्ति–साधना में कामादि प्रवृत्तियों को सबसे बड़ा अवरोध मानते थ। आकर्षणमयी नारी इसी से उनकी भर्त्सना एवं निंदा की पात्र थी। पर नारी के कल्याणमय रूप, पतिव्रता एवं सतीत्व की उपेक्षा वे न कर सके। नारी–हृदय के निश्छल, समर्पण, आकांक्षारहित स्नेह के साथ उन्होंने अपनी भावनाओं का तादात्म्य कर दिया और अपने को अविनाशी प्रियतम की पत्नी एवं प्रेयसी माना। नारी के वात्सल्यपूर्ण माता–रूप के प्रति भी कबीर के हृदय में श्रद्धा की भावना थी। साथ ही कबीर ने नारी को भक्ति की अधिकारिणी माना। कबीर की वाणी में नारी के प्रति खंडनात्मक दृष्टिकोण, उसका प्रतीक रूप, पतिव्रता रूप के प्रति मोह और आदर की भावना सभी बातें तो मिलती हैं, पर तत्कालीन नारी की सामाजिक, आर्थिक स्थिति के विषय में कबीर मौन है। कबीर ने नारी को भक्ति का अधिकार तो दिया, किन्तु उसके आर्थिक, सामाजिक अधिकारों के सम्बंध में अन्यमनस्की ही रहे।

सन्दर्भ सूची

1.कबीर वचनावली – पृ. 141
2.कबीर वचनावली – पृ. 141
3.कबीर ग्रंथावली; पृ. 192
4.कबीर ग्रंथावली; पृ. 123

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net